बौद्ध दर्शन के 'आष्टांगिक–मार्ग' का आलोचनात्मक मूल्यांकन व प्रासंगिकता (वर्तमान परिपेक्ष्य में)

नविन्द्रा बाइ

यह शोध लेख वर्तमान परिपेक्ष्य में बौद्ध दर्शन के 'आष्टांगिक–मार्ग' का आलोचनात्मक मूल्यांकन व प्रासंगिकता का एक अध्ययन प्रस्तुत करता है। व्यसन की प्रवृत्ति, चोरी, धोखा, स्वार्थ की भावना, कट्टरता, हिंसा, डकैती, झूठ आदि समस्यायें समाज में निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इन ज्वलंत समस्याओं से जूझती रुग्ण मानवता के लिये महात्मा बुद्ध के उन उपदेशों की महती आवश्यकता है जो अनिश्चितता के भंवर में फंसे मानव जगत की रक्षा कर सके। महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'आष्टांगिक–मार्ग' उपर्युक्त समस्याओं के निराकरण का मार्ग प्रशस्त करता है जो संसार के दुःखों को दूर करके विश्व में भ्रातृत्व, सहयोग व प्रेम की भावना को विकसित करता है।